आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांकः–प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2714 • उदयपुर, मंगलवार 31 मई, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

पाली (राजस्थान) में दिव्यांग सेवा

नारायण सेवा संस्थान वर्षों से आपके आशीर्वाद से दिव्यांगजन सेवा में रत है। पूरे देश में स्थान–स्थान पर जाकर इसकी शाखाओं द्वारा दिव्यांगजन सहायता शिविर आयोजित किये जा रहे हैं। इस पुण्य कार्य को गति देने के लिये एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 1 मई 2022 को रोटरी क्लब बापू नगर, पाली मारवाड़ में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता गौतमचंद जी कवाड़ रोटरी क्लब, पाली रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 52 कृत्रिम अंग माप 09, कैलिपर माप 09 की सेवा हुई तथा 02 का ऑपरेशन हेतु चयन किया गया।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान् गौतम चंद जी कवाड़ (ए.जी.रोटरी क्लब) अध्यक्षता श्रीमान् मांगीलाल जी गांधी (सदस्य, रोटरी क्लब), विशिष्ट अतिथि श्रीमान् राजेन्द्र जी सुराणा (अध्यक्ष, रोटरी क्लब), श्रीमान् वर्धमान जी भण्डारी (सचिव, रोटरी क्लब), श्रीमान् कान्तीलाल जी मुथा (शाखा संयोजक, पाली) रहे।

डॉ. सिद्धार्थ जी लाम्बा (ऑर्थोपेडिक सर्जन), डॉ. नेहा जी अग्निहोत्री (पी.एन.डो.), श्री भंवर सिंह जी (टेक्नीशियन), सहित शिविर टीम में श्री लालसिंह जी भाटी (शिविर प्रभारी), मुकेश जी त्रिपाठी (सह प्रभारी), श्री बहादुरसिंह जी मीणा (सहायक) ने भी सेवायें दी।

पुसद, जिला यवतमाल (महाराष्ट्र) में दिव्यांग सेवा

नारायण सेवा संस्थान वर्षों से आपके आशीर्वाद से दिव्यांगजन सेवा में रत है। पूरे देश में स्थान–स्थान पर जाकर इसकी शाखाओं द्वारा दिव्यांगजन सहायता शिविर आयोजित किये जा रहे हैं। इस पुण्य कार्य को गति देने के लिये एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 24 अप्रेल 2022 को गजानन मंगलम शंकर नगर पुसद, जिला यवतमाल (महाराष्ट्र) में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता दिव्यांग सेवा समिति पुसद (महाराष्ट्र) रही। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 162, कृत्रिम अंग माप 31, कैलिपर माप 10 की सेवा हुई तथा 37 का ऑपरेशन हेतु चयन किया गया।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान् अनिल जी आडे (उपविभागीय पुलिस अधिकारी, पुसद) अध्यक्षता डॉ. किरण सुकतवाउ (मुख्या अधिकारी नगर परिषद, पुसद) विशिष्ट अतिथि डॉ. सिमलाई वानखेड़े (अधीक्षक, आयुर्वेद कॉलेज, पुसद), श्रीमान् राम महाराज (भागवताचार्य दिग्रस), श्रीमान् सुरेन्द्र सिंह जी राठौड़ (अध्यक्ष, दिव्यांग सेवा समिति, पुसद), श्री राधेश्याम जी जांगीड़ (अध्यक्ष, आयुर्वेद कॉलेज, पुसद), श्रीमान् दयाराम जी चव्हाण (उपाध्यक्ष, दिव्यांग सेवा समिति, पुसद), श्रीमान् हरिप्रसाद जी विश्वकर्मा (उपाध्यक्ष, दिव्यांग सेवा समिति, पुसद), विनोद जी राठौड़ (सेवा प्रेरक, नांदेड़) रहे।

डॉ. वरुण जी श्रीमाल (ऑर्थोपेडिक सर्जन), रिहांस जी महता (पी.एन.डो.), किशन जी सुथार (टेक्नीशियन) सहित शिविर टीम में श्री हरिप्रसाद जी (शिविर प्रभारी), श्री गोपाल जी गोस्वामी, सत्यनारायण जी मीणा (सहायक) ने भी सेवायें दी।

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

विशाल निःशुल्क दिव्यांग जांच,
ऑपरेशन चयन एवं
कृत्रिम अंग (हाथ–पांव) माप शिविर

दिनांक : 5 जून, 2022

▪ औरंगाबाद, बिहार
▪ कृषि उपज मण्डी, ओरछा रोड, पृथ्वीपुर, जिला निवाड़ी, म.प्र.
▪ जेबीएफ मेडिकल सेंटर, भारतीय ग्राम सदल्लापुर, राम धर्म कांठा के पास, गजरौला, उमरोह, उ.प्र.
▪ हनुमान व्यायामशाला, पटेल मैदान के पास, अजमेर, राज.

इस दिव्यांग भाग्योदय शिविर में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

पू. कैलाश जी 'मानव'
संस्थापक चेयरमैन, नारायण सेवा संस्थान

'सेवक' प्रशान्त भैया
अध्यक्ष, नारायण सेवा संस्थान

+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

1,00,000 We Need You !
से अधिक सहयोग देकर, दिव्यांगों के सपनों को करें साकार
अपने शुभ नाम या प्रियजन की स्मृति में करायें निर्माण

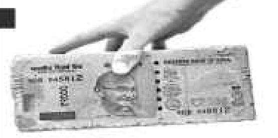

मानवता के मन्दिर में बनेंगे कई वार्ड-सेवा कक्ष
* 450 बेड का निःशुल्क सेवा हॉस्पीटल * 7 मंजिला अतिआधुनिक सर्वसुविधायुक्त* निःशुल्क शल्य चिकित्सा, जांचें, ओपीडी * भारत की पहली निःशुल्क सेन्ट्रल फेब्रीकेशन यूनिट * प्रज्ञाचक्षु , विमंदित, मूकबधिर, अनाथ एवं निर्धन बच्चों को निःशुल्क आवासीय व्यावसायिक प्रशिक्षण

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org
Cont. : 0294-6622222, +917023509999 (WhatsApp)

सकारात्मक सोच

एक परीक्षा के दौरान अध्यापक ने हल करने हेतु प्रश्न–पत्र विद्यार्थियों को वितरित किए। प्रश्न पत्र के अग्र भाग पर लिखा था, पीछे के पृष्ठ पर अंकित प्रश्न को अवश्य करें। विद्यार्थियों ने पृष्ठ पलटा, पूरे पृष्ठ पर एक छोटा–सा काला बिन्दु अंकित था और प्रश्न लिखा था, "जो कुछ आपको दिखाई देता है, उसका वर्णन अपने शब्दों में करें।" सभी विद्यार्थियों ने उस छोटे से काले बिन्दु के बारे में वर्णन किया। किसी ने उसके परिमाप, किसी ने उसकी स्थिति और किसी ने उसके आकार पर नाना–नाना प्रकार की टिप्पणियाँ कीं और उत्तर पुस्तिका अध्यापक को लौटा दी। अध्यापक ने सभी उत्तर पुस्तिकाओं को देखा और कक्षा में विद्यार्थियों से कहा, "तुम सभी ने पीछे के पृष्ठ पर अंकित उस काले बिन्दु का अपने–अपने तरीके से वर्णन किया, परन्तु किसी ने भी उस बिन्दु के अलावा चारों ओर के सफेद हिस्से का वर्णन नहीं किया।" हमें भी जीवन में श्वेत रंग रूपी सकारात्मक पक्ष के बारे में सोचना चाहिए। कालेपन अर्थात् नकारात्मक पक्ष के बारे में नहीं सोचना चाहिए। सकारात्मकता ऊर्जावान बनाती है, जबकि नकारात्मकता हमें ऊर्जावान बनाती है। सकारात्मकता से ही कार्य सिद्ध होते हैं। अतः सदैव सकारात्मक सोचें।

घिसट घिसट कर संस्थान में आया लौटते वक्त अपने पैरों पर खड़ा था

सहारनपुर (उत्तर प्रदेश) जिले के गांव भाबसी निवासी श्री धर्मवीर सिंह के पुत्र अर्पित जन्म से ही एक पांव में घुटनों से नीचे तक दिव्यांग था। गरीबी के कारण न उसका इलाज हो सका और न ही उसे पढ़ने के से भेजा जा सका। माता– पिता बच्चे की इस हालत और उसके भविष्य को लेकर सदैव चिंतित रहते। घर का माहौल हर समय उदासी से भरा रहता था। धर्मवीर बताते हैं एक दिन उन्हें किसी परिचित में नारायण सेवा संस्थान में दिव्यांगों की निःशुल्क चिकित्सा, कृत्रिम अंक लगाने और सहायक उपकरण दिये जाने की जानकारी दी। उसके बाद वे बेटे को लेकर उदयपुर आए और संस्थान के डॉक्टर से मिले जिन्होंने दिलासा देते हुए कहा कि आप बेटे को गोद में उठा कर लाए है किंतु वह अपने पांव पर खड़ा होकर चलते हुए अपने घर में प्रवेश करेगा। कुछ दिनों के इलाज के बाद उसे विशेष कैलीपर पहनाया गया। अर्पित जब पिता के साथ पुनः अपने घर के लिए रवाना हुआ तब यह संस्थान के अस्पताल से चलते हुए ही बाहर निकला। पिता ने कहा मुझे बहुत अच्छा लग रहा है। अब इसके लिए मैं वो सब– कुछ करूंगा जिसका सपना देखा करता था।

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति
(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

माँ तुम मोहि दिजे कुछ चीन्हा।
जैसे रघुनायक मोहि दीन्हा।।
और चूड़ा मनि उतारित अवदया।
हर्ष समेत पवनसुत लयो।

जिन हनुमान जी महाराज जहाँ भी सत्संग होता है। वहां हनुमान जी महाराज पधारते है।

और हनुमान जी महाराज ने देखा सीता माताजी के आँखों में तो आंसू आ रहे हैं। सीता जी ने कहाँ ये आँखे ही रोक रही है। विरह की अग्नि तो पुत्र हनुमान इतनी ज्यादा है के मैं कभी से अपने प्राणों का त्याग कर देती। लेकिन ये आँखें पलक पावड़े बिछाये हैं। मैं राम जी के दर्शन करना चाहती हूँ। हनुमान जी तुम कहना भगवान को

ऐसा दुष्ट रावण धमकी देकर के गया है। एक मास के अन्दर प्रभु पधार जावे। और आप सब पधारना और ये भी कहा कि अब तुम भी जा रहे हो तुम्हारे को देखकर के मन में बड़ा कलेजे को बड़ी ठंण्डक मिली थी। कि मेरा हनुमान आया है पर आप भी आज्ञा लेना चाहते हो। हनुमान जी आपका जाना तो जरुरी है राम जी को लेकर के जल्दी पधारना। हनुमान जी ने पुनः प्रणाम किया चूड़ामणि को हर्ष समेत ले चले। रामचरित मानस सिखाने का ग्रंथ है।

नारायण सेवा ने परिवार को काल के मुंह से निकाल लिया

उदयपुर जिले के आदिवासी क्षेत्र चारों का फलां निवासी मेधा (60) वृद्धावस्था में पत्नी के संग जीवन की गाड़ी खींच रहे थे। इकलौता बेटा अलग रहता था करीब 9 माह पूर्व बेटे की पत्नी अपने तीन मासूम बच्चों को छोड़कर अन्यत्र चली गई। अब वृद्धा दादा – दादी पर गृहस्थी की जिम्मेदारी आ पड़ी । लॉकडाउन में बेटे की मजदूरी छूट गई और मदिरापान की उसकी लत के चलते परिवार भूखमरी के मुहाने पर जा खड़ा हुआ, जहां ईश्वर के अलावा कोई दूसरा मददगार नजर नहीं आ रहा था।

ऐसे में एक दिन नारायण सेवा संस्थान की टीम गांव में गरीबों को राशन की मदद पहुंचाने के ध्येय से पहुंची तो स्थानीय लोगों में वृद्ध मेघा और तीन पोतों के उनसे मिलवाया। उनकी विकट स्थिति देखकर संस्थान में हर माह राशन सामग्री देने का फैसला लिया। नन्हें नन्हें बच्चों को वस्त्र एवं पोषाहार भी दिया गया।

मेघा ने कहा कि बुढापें में पड़ोसियों और नारायण सेवा संस्थान ने मदद करके परिवार को काल के मुंह से निकाल लिया, मैं दिल से उनके लिए दुआ करता हूँ।

थेंक्यू नारायण सेवा संस्थान

पेशे से ट्रक ड्राईवर अरुणसिंह की जिंदगी का सबसे बुरा दिन वो था जब एक दिन उनकी गाड़ी पर 11 हजार वोल्टेज बिजली का तार गिर पड़ा। उसे दोनों पांव और एक हाथ गंवाना पड़ा। उनका भाई कहता है–जी मेरा नाम अतुलसिंह, मेरे भैया अरुणसिंह मैं जादोन यू.पी. का रहने वाला हूं। मेरे भैया पेशे से ट्रक ड्राईवर थे और दो पैसे कमाकर परिवार का पालन– पोषण करते थे।एक दिन अचानक ऐसा आया कि मेरे भैया की गाड़ी पर 11 हजार वोल्टेज हाई टेंशन का तार गिर गया जिस कारण से पूरी गाड़ी में करंट आ गया। मेरे भैया उसी में बैठे हुए थे। करंट के कारण झुलस गये और जिस कारण से मेरे भैया के दोनों पैरों को और एक हाथ भी गंवाना पड़ा, फिर उसके बाद काफी इलाज चलाना पड़ा। और हम पूर्णरूप से बर्बाद हो चुके थे भैया का इलाज करवाने में। बड़ी दुःख की बात तो ये है कि मेरी बहनों और मेरी खुद की पढ़ाई भी बंद हो चुकी थी। मुझे टी. वी. पे नारायण सेवा संस्थान के बारे में जानकारी हुई। यहां पर सारी सुविधाएं निःशुल्क है। और हम यहां पर आये हैं भैया के पैर लगे हैं तो मुझे बहुत खुशी हुई है। थेंक्यू नारायण सेवा संस्थान।

सम्पादकीय

सामाजिक सेवा मनुष्य का कर्तव्य है। सही में कहें तो यह ऋणमुक्ति का एक उपाय है। व्यक्ति जब जन्म लेता है तो वह माता–पिता से पालित होता है किन्तु उसके सीखने का क्रम समाज से ही विकसित होता है। यह ठीक है कि पहली गुरु माँ होती है पर समाज भी व्यक्ति के लिये प्रारंभिक पाठशाला ही है। समाज के सहयोग व सदाशयता से ही वह कई बातें, आदतें, व्यवहार सीखता है। उसका वातावरण, पर्यावरण उसे कई बातें सिखाता है। यह ज्ञान हरेक व्यक्ति पर समाज का ऋण है। इस ऋण से मुक्ति के लिये जब भी अवसर मिले तो व्यक्ति को प्रयास करना ही चाहिये।

ऋण से मुक्त हुए बिना जीवन से भी मुक्ति संभव नहीं है। ऐसी दशा में समाज का ऋण भी व्यक्ति को उतारना ही चाहिये। सामाजिक ऋण से उऋण होने के लिये उसे अपने स्वभाव व रूचि के अनुसार सामाजिक सेवा का क्षेत्र चुनना चाहिये। वह शिक्षा, चिकित्सा, प्रेरणा अर्थ या कुछ भी हो सकता है।

कुछ काव्यमय

देव, पितृ व गुरु ऋण
सदियों से माने गये हैं।
पर सामाजिक ऋण के
विचार भी नहीं नये हैं।
इनसे मुक्त होकर ही
हम पूर्णता पा सकते हैं।
ईश्वर के चरणों में
उऋण होकर जा सकते हैं।

अपनों से अपनी बात

सेवा का मर्म

ब्रह्माण्ड कहता है– मेरे से मांगो, मेरे पर यकीन करो कि तुम जो मांगोगे, मैं दे दूंगा। तुम अविश्वास मत करना, किन्तु–परन्तु मत लगाना–लाला। लेकिन–वेकिन मत लगाना। यदि–वदि मत लगाना। ब्रह्माण्ड को कहना– हे ! ब्रह्माण्ड, मैं आपका काम करूंगा, मैं प्रसन्नता रखूंगा, मैं बुजुर्गों की सेवा करूंगा मेरी माता की सेवा करूंगा। यक्ष ने कहा था– युधिष्ठिर, धरती से कौन भारी है ? युधिष्ठिर तत्काल कहता– माता। हे माते! मैं आपकी आज्ञा का पालन करूंगा,माँ आपकी औषधि का खयाल रखूंगा, माँ मैं आपको सुखी रखूंगा, जिससे दिव्यांगों के ऑपरेशन होंगे, माँ, मैं इनको खड़ा करवा दूंगा। माँ मैं आपकी आज्ञा पर अपना शीश झुकाता

हूँ। आकाश से बड़े पिता जी, हे पिताश्री, आपकी अंगुली पकड़कर चलता था, मुझे भय लगता था, कहीं मैं अपना हाथ न छोड़ बैठूं, मैंने कहा – पिताजी, आप मेरी अंगुली पकड़ लीजिए, और जब दादी माँ ने पोते को कहा– लाला, ये युग अच्छा है। लेकिन कभी– कभी खराबियाँ पैदा हो जाती है, कभी कोई कपूत निकल जाते हैं। हमारा देश श्रवण कुमार का देश है। जहाँ करोड़ों बच्चे अपने माता– पिता की बहुत सेवा करते हैं, वहाँ एक दादी का चश्मा टूट गया, चार बार पोते को कहा, तीन बार बेटे को कहा, लेकिन चश्मा नहीं आया, चश्मा नहीं आया।

बच्चों के शूट आ गये, पत्नी की साड़ियाँ आ गयी, घर पर खिलौने आ गये। लेकिन दादी का चश्मा नहीं आया, दादी जी बाथरूम में गयी–बिना चश्मा के गिर पड़ी। गिरते ही चोट लग गई, और प्राण पखेरू उड़ गये। जब दादी जी के प्राण प्रखेरू उड़े, फोन घन–घनाने लगे, ब्याईजी को फोन करना, अरे, हमारे दादी का मोक्ष हो गया, कल हम बड़े गाजे–बाजे के साथ ले जायेंगे, बेशर्मों, जब–तक दादी घर में थी, तब आपने टूटा हुआ चश्मा ठीक नहीं करवाया। ये कैसा दुर्भाग्य आ गया?

–कैलाश 'मानव'

ज्ञान व इच्छा शक्ति हो

एक बहुत प्रेरणादायक कहानी आपको सुनाना चाहता हूँ। जो ये सिद्ध करती है कि मेहनत करने वालों की कभी हार नहीं होती। एक आदमी बेरोजगार था। उसने ऑफिस बॉय की पोस्ट के लिये माइक्रोसॉट कंपनी में अर्जी दी। वहाँ के एच. आर. मैनेजर ने उसे देखा और उसे इंटरव्यू के लिये बुलाया। अच्छा तो तुम माइक्रोसोट में काम करना चाहते हो। अच्छा ठीक है तुम्हारा ईमेल एड्रेस दो ताकि मैं तुम्हें जवाब भेज सकूँ कि कब से तुम्हें काम शुरू करना है। वो आदमी बोला सर मेरा न तो कोई ईमेल आईडी है, न मेरे पास कम्प्युटर है।

मैं तो जानता ही नहीं ज्यादा कुछ।

एच. आर. मैनेजर बोला तो फिर माफ करना भाई, मैं तुम्हारे लिये ज्यादा कुछ नहीं कर सकता। अगर तुम्हारे पास ईमेल का पता नहीं है तो तुम इस नौकरी के लायक ही नहीं, तुम जीवन में कुछ नहीं कर सकते। वह लड़का बिना कुछ बोले उस ऑफिस से बाहर निकल गया। उसके जेब में सिर्फ दस रुपये थे। वह बेकार था और काम करके कुछ कमाना चाहता था। अचानक उसके मन में एक विचार आया। वो सीधा सब्जी मंडी गया और वहाँ से उसने दस रुपये के टमाटर खरीदे। टमाटर खरीदकर वह उसी मंडी में बैठ गया और दो घंटे में उसके सारे टमाटर बिक गये। अब उसके पास बीस रुपये हो गये। देखिये सौ प्रतिशत लाभ। इस व्यापार में उसको बहुत मजा आया। फिर उसने बीस के खरीदे और घर–घर जाकर उनको बेचने लगा। धीरे–धीरे उसका बिजनेस बढने लगा। उसने दुकान ले ली। फिर उसने ट्रक खरीद लिया।

कुछ समय में ही वह मंडी का सबसे बड़ा व्यापारी बन गया। पाँच साल में वह शहर के सबसे धनी व्यक्तियों की लिस्ट में शामिल हो गया, मेहनत के दम पर। उसने अपने परिवार के भविष्य के लिये कुछ योजना बनाई और उसके चलते अपना बीमा कराने की सोची। तो उसने एक बीमा एजेंट को बुलाया और बात–बात में एजेंट ने उसका ईमेल एड्रेस पूछ डाला। व्यापारी ने हँस कर कहा– भैया मेरे पास न तो कोई ईमेल एड्रेस है और न ही कोई कम्प्यूटर है। एजेंट सकते में पड़ गया। आपके पास ईमेल एड्रेस नहीं है? आप मजाक कर रहे है– शायद। आप शहर के सबसे बड़े आदमी है और आपके पास ईमेल नहीं है। अगर आपके पास ईमेल होता तो पता नहीं आज आप कहाँ होते? व्यापारी हँसते हुये बोला– हाँ, अगर ईमेल होता तो मैं माइक्रोसॉट कंपनी का ऑफिस बॉय होता। तो ये है वास्तविकता जीवन की, कि जरूरी नहीं कि हमारे पास उच्च कोटि का ज्ञान हो? जरूरी है कि हमारे पास उच्च कोटि की दृढ इच्छा शक्ति हो।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित-झीनी-झीनी रोशनी से)

सुबह 4 बजे से ही काम शुरू कर दिया। वर्षा काफी देर से थमी हुई थी फिर भी भट्टियों पर चदरें तान दी ताकि वर्षा आ जाये तो सत्तू खराब नहीं हो। सत्तू को ढकने के लिये भी बोरियां मंगवा रखी थी। घन्टे भर तक कार्य निर्बाध रूप से चलता रहा मगर इसके बाद वर्षा शुरू हो गई, देखते ही देखते इसने विकराल रूप ग्रहण कर लिया। पतरों पर फैलाये सत्तू को बोरियों से ढक लिया मगर सभी कार्यकर्ता बुरी तरह भीग गये। वर्षा थोड़ी देर अपना वेग बता कर शान्त हो गई तो शेष कार्य यथावत सम्पन्न हो गया।

प्रति माह 100 रु. भेजने का संकल्प करने वाले पी.जी. जैन का एक और पत्र आया। उन्होंने इच्छा व्यक्त की कि वे शारीरिक रूप से भी सहयोग देना चाहते हैं, रुपये देने वाले तो बहुत मिल जायेंगे। कैलाश ने उन्हें निमंत्रण दे दिया। अगले रविवार को शिविर था, इसकी जानकारी भी दे दी। वे शनिवार को ही आ गये। गरीब बच्चों में वितरित करने के लिये ढेर सारी कापियां, पेन्सिलें इत्यादि भी अपने साथ लेकर आये। इसके अलावा दो हजार रु. की नकद राशि अलग से दी।

कैलाश उन्हें अपने घर ले गया और भोजन कराया, रात को अपने घर पर ही ठहराया। अगले दिन शिविर के लिये निकलना था। इस बार कार्यकर्ताओं की टोली बढ़ गई। उन दिनों टी.वी. पर रामायण सीरियल का बोलबाला था। यह रविवार को ही आता था और प्रत्येक व्यक्ति इसे देखता था। जितनी देर वह सीरियल चलता रहता उतनी देर पूरे शहर में सन्नाटा छा जाता, ऐसे प्रतीत होता जैसे कर्फ्यू लग गया हो।

इस सीरियल को देखने के मोह में कई लोग शिविर से कन्नी काट गये। जो समर्पित थे, ऐसे जुझारू सेवाभावी सीरियल छोड़कर शिविर में आये। शिविर में डॉक्टर के सहायक भी आने वाले थे, वे नहीं आये तो कैलाश ने प्रशान्त को उनके घर भेजा, उन्होंने बहाना बनाकर आने से मना कर दिया। असली कारण तो सब को पता था, मगर क्या कर सकते थे। जितने लोग आये वे भी पिछली बार से तो ज्यादा ही थे।

अंश - 111

नारायण सेवा में मिले सेवा और प्यार

ख्यालीराम–बौद्धदेवा निवासी कनीगवा जिला बदायूँ (उ.प्र.) के खेतीहर साधारण परिवार का बेटा नरेशपाल (19) दोनों पॉव से लाचार था। करीब ढाई साल की उम्र में बुखार के दौरान लगे इंजेक्शन के बाद दोनों पाँव लगातार पतले होते चले गए। बिना सहारे के लिए उठना, बैठना और खड़ा रहना भी मुश्किल था। मथुरा में इलाज भी करवाया परन्तु हालत वही रही। नरेश ने बताया कि हरियाणा में उसके परिवार से सम्बद्ध व्यक्ति ने नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर में पोलियो चिकित्सा की जानकारी दी जिसका इलाज भी यहीं हुआ था। नरेश के साथ आए उसके भाई अभय सिंह ने बताया कि ऑपरेशन हो चुका है। हम पूरी तरह संतुष्ट हैं। दुनियाभर में संस्थान का प्रचार होना चाहिए ताकि हम जैसे गरीब लोग भी इसका लाभ ले सकें। इसके संस्थापक पूज्य 'मानव सा.' के जुग–जुग जीने की प्रभु से कामना करते हैं।

गुणकारी है खीरा ....

खीरा ठंडक देने के साथ ही ताजगी से भरा होता है। यह थकी आंखों को आराम देने के अलावा शरीर को ऊर्जा से भर देता है। खीरा कई तरह की समस्याओं को भी दूर भगाता है।

• ऊर्जा देता है

खीरे में मौजूद विटामिन बी और कार्बोहाइड्रेट ऊर्जा व ताजगी का बड़ा स्रोत है। थकावट महसूस होने पर खीरा तरोताजा कर देता है।

• सिर दर्द में फायदेमंद

सिर दर्द एक सामान्य समस्या है। इसे ठीक करने के लिए बार–बार दवा का सहारा लेना अच्छी बात नहीं है। इसलिए सिर दर्द होने पर एक या आधा खीरा खाएं और सो जाएं, जल्द आराम मिलेगा। खीरे में विटामिन बी, शुगर और इलेक्ट्रोलाइट्स की अच्छी मात्रा होती है। यह शरीर में कम हुए पोषक तत्वों की भरपाई करता है।

• हटाए सांसों की दुर्गंध

प्याज–लहसुन वाला भोजन किया है और मुंह से दुर्गंधं आ रही है तो खीरे का टुकड़ा जीभ पर रखें और तालु से चिपकाकर करीब एक मिनट तक रखें इससे दुर्गंध जल्द ही चली जाएगी।

• सनबर्न से राहत

लगातार धूप में रहने से त्वचा में जलन होने लगती है और वह काली पड़ जाती है। इस समस्या को दूर करने के लिए खीरे को काटकर प्रभावित क्षेत्र पर लगाएं। इससे जलन मिनटों में दूर हो जाएगी।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

आपश्री का सहयोग मिले : प्रार्थना

भारत के विभिन्न शहरों में 720 स्नेह मिलन
2026 के अंत तक 720 मिलन समारोह आयोजित करने का संकल्प

960 शिविरों द्वारा निःशुल्क जांच एवं उपचार
2026 के अंत तक 960 आर्टिफिशियल लिम्ब केम्प लगाये जायेंगे।

1200 नई शाखाएं
2026 के अंत तक 1200 नई शाखाएं खोलने का लक्ष्य।

120 कथाएं
2026 के अंत तक विभिन्न शहरों में 120 कथाएं आयोजित की जायेंगी।

वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी
2026 के अंत तक वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी का निर्माण पूर्ण होकर 10 हजार से अधिक लोग लाभान्वित होंगे।

नारायण सेवा केन्द्र
आगामी 5 वर्षों में संस्थान के वर्तमान में संचालित सभी केन्द्रों में रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण आरम्भ किये जायेंगे।

विदेश में सेवा प्रकल्पों का विस्तार

26 देशों में पंजीयन
वर्ष 2026 के अंत तक 26 देशों में संस्थान के पंजीकृत कार्यालय खोलने का लक्ष्य

6 से सेवा केन्द्र का शुभारम्भ
6 से अधिक देशों में केन्द्र स्थापित कर संस्थान सेवाओं को देगा विस्तार

20 हजार दिव्यांगों को लाभ
विदेश के 20 हजार से अधिक जरूरतमंद एवं रोगियों को लाभान्वित करने का होगा प्रयास

अनुभव अमृतम्

चैनराज जी लोढ़ा देव के रूप में भले ही ना हो, मेरे हृदय के अंतर स्थल में उच्च सिंहासन पर विराजते हैं। मैं उनके दिए हुए प्रेम को, सहकार को, त्याग को, तन मन धन की सेवा को कभी नहीं भूला पाऊंगा। जब तक यह दुनिया रहेगी, चैनराज जी लोढ़ा साहब की प्रसंशा होती रहेगी। पुनरावलोकन में पुनः आते हैं 1989 पर पूज्य चैनराज लोढ़ा साहब जैसे नक्षत्र, वैदिप्य मान प्रकाश की तरह, प्राप्त हुए और उनके नश्वर शरीर को छोड़ने के बाद मुझे लगता है हृदय को प्रकाशित करते रहेंगे। वर्ष 89 वनवासी क्षेत्र के शिविर चलते रहे। बांसवाड़ा ट्रांसफर हुआ।

बांसवाड़ा से रोज 4:15 बजे डाक भेजी जायेगी तो 1 दिन लग जाएगा, आदरणीय असिस्टेंट सेल्सटेक्स ऑफिसर भाई साहब की कृपा से एक कंडक्टर साहब को एक लाइफ मेंबर बनें। वह प्रेम बरसा। मुकेश जी शर्मा साहब के पूज्य पिता श्रीजी रोडवेज में अधिकारी थे। बहुत प्रेम रखा उन्होंने। वह भी लाइफ मेंबर बनें। उन्होंने औरों को भी लाइफ मेंबर बनाया।

एक टेप रिकॉर्ड खरीदा। बहुत सारी कैसेटें ली, मैंने कहा कि मैं एक कैसेट लिफाफे में दूंगा, जब गाड़ी बस स्टैंड पहुँचे, वहाँ प्रशांत या कल्पना या और कोई लेने आ जाएंगे। वह कैसेट उनको दे देना। उन्होंने कहा हाँ, जरूर हम यहाँ सेवा करेंगे, और उनकी कैसेट वापस ले आना। रोज कैसेट का आदान–प्रदान चलता रहा। वह सुनते सुनकर के नोट करते, कार्य होता। उन्होंने भी एक टेप रिकॉर्ड खरीदा कमला जी ने जगदीश जी आर्य साहब ने, प्रशांत भैया ने कल्पना ने और वे लिखते। यहाँ काम हो गया। यह नयापन हुआ। भगवान की कृपा एक दिन जब कमरे में रिकॉर्डिंग करवा रहा था। पौन घंटा लग गया, 45 मिनट बाद बाहर आया। कमरे के बाहर कम से कम 10– 15 महानुभाव थे।

मकान मालिक भी थे। उनकी धर्मपत्नी भी थी। उन्होंने देखते ही कहा चलो कैलाश जी चलते हैं– हॉस्पिटल चलते हैं। मैंने कहा अचानक क्या हो गया? कौन बीमार हुआ? बोले बीमार आप हुए। आपका दिमाग खराब हो गया है। लगता है 45 मिनट से बंद कमरे में चिटकनी लगाके, बड़बड़ा रहे थे– आप। इसलिए आपको मानसिक हॉस्पिटल में भर्ती कराना है।

मैंने हाथ जोड़कर कहा– मैं टेप में रिकॉर्ड कर रहा था। मैं इस कैसेट में कुछ शब्द भर रहा था, और जब उनको कैसेट बताई गई, सुनाई गई। उन्होंने कहा अच्छा ऐसा है। हम तो सोचे थे आप का दिमाग खिसक गया है। स्क्रू ढीला पड़ गया है। होता चला गया श्री राम चंद्र जी दाधिच साहब ने ही रोडवेज बस स्टैंड के कंडक्टर साहब का परिचय करवाया था। वह कैसेट ले जाया करते थे। हर 5 दिन में। 5 दिन हो गया सुप्रभात शाम को बैठते रोडवेज की बस में शुक्रवार को रात के 10:00 बजे पहुँचते। शनिवार रविवार मिलता, उन्हीं दिनों में जो कुछ कैंप किए गए।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 464 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. +91-294-6622222,+91-7023509999 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023